INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in June 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

जयशंकर प्रसाद के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

अशोक कुमार बगावत,अतिथि सहायक आचार्य,(हिन्दी), भीलवाड़ा -राजस्थान

भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन के गूढ़ तत्त्वों की मार्मिक व्याख्या करने वाले जयशंकर प्रसाद ने कुल तीन उपन्यास लिखे हैं, 'कंकाल', 'तितली' एवं 'इरावती' जिसमे 'इरावती' अपूर्ण रहा। इन उपन्यासों का महत्त्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है । 'कंकाल' में मध्यवर्गीय नागरिक जीवन को खुरचकर देखा गया है। इसमें नागरिक जीवन के सभी प्रतिनिधि आ गये हैं। स्त्री- पात्रों में पतिव्रत-च्युत किशोरी, परित्यक्ता यमुना स्वैरिणी घंटी, धर्मच्युत लतिका, बनविहंगिनी माला, स्त्रियों की विविध समस्याएँ सामने ले आती हैं।

स्त्री पात्रों का चित्रण संवेदना की रेखाओं से किया गया है तारा (यमुना) का चरित्र तो नारी - जीवन की विवशता और उज्ज्वल दोनों का प्रतीक है। भारतीय नारी विवश है, असहाय है। वह परित्यक्ता होती है, किंतु अपने सतीत्व की रक्षा करती है। उसका यह कथन उसकी निर्मलता का प्रमाण है- **"मंगल ! भगवान जानते होंगे कि तुम्हारी शया पवित्र हैं। कभी मैंने स्वप्न में भी, तुम्हें छोड़कर इस जीवन में किसी से प्रेम नहीं किया और न तो मैं कलुषित हुई। यह तुम्हारी प्रेम - भिखारिनी पैसे की भीख नहीं माँग सकती और न पैसे के लिए अपनी पवित्रता बेच सकती हैं।"१** इतनी उच्च - भावनाओं को लेकर चलने वाली यह नारी आज हिन्दू- समाज में कितनी असहाय है। उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं, वह विधाता की एक झुँझलाहट है। उसके भाग्य में लिखा है- **"उड़ कर भागते हुए पक्षी के पीछे चारा और पानी से भरा हुआ पिंजरा लिये घूमती रहे। आज का पुरुष इतना अपवित्र, हीन और स्वार्थी हो गया है- कि वह नारी को बहन के रूप में देख ही नहीं सकता। तारा (यमुना) का यह प्रश्न, विजय बाबू मैं दया की पात्री एक बहन बनना चाहती हूँ । है किसी के पास इतनी निःस्वार्थ स्नेह संपत्ति जो मुझे दे सके ?"२**

वस्तुतः आज एक चुनौती है, आज भी भारतीय समाज में अधिकांश स्त्रियाँ पराधीनता में जी रही है। कहने को उन्हें संवैधानिक तौर पर अनेक अधिकार मिल चुके हैं, किंतु स्त्री की वास्तविक दुनियाँ अभी भी कैद और बंदिशों से घिरी हैं। स्त्रियों की स्थिति के संबंध में मंगलदेव कहते हैं-

"सीता निर्वासन एक इतिहास विश्रुत महान सामाजिक अत्याचार है, और ऐसे अत्याचार अपनी दुर्बल संगिनी स्त्रियों पर प्रत्येक जाति के पुरुषों ने किया है। किसी-किसी समाज में तो पाप के मूल में स्त्री का ही उल्लेख है, और पुरुष सदैव निष्पाप है। यह भ्रांत मनोवृत्ति अनेक सामाजिक व्यवस्थाओं के भीतर काम कर रही है। रामायण भी केवल राक्षस - वध का इतिहास नहीं है, किंतु नारी-निर्यातन का सजीव इतिहास लिखकर वाल्मीकि ने स्त्रियों के अधिकार की घोषणा की है।"३

घंटी विजय से स्त्रियों की सामाजिकता, उनके रहन-सहन और समाज में उनके प्रति होने वाली प्रतिक्रिया को दर्शाते हुए स्त्री के हक, उसके अधिकार और नैसर्गिक प्रेम की बात को अपनी स्पष्टवादिता से बताती हुई कहती है- "हिन्दू स्त्रियों का समाज ही कैसा है, उसमें कुछ अधिकार हो तब तो उसके लिए कुछ सोचना विचारना चाहिए और जहाँ अंध अनुसरण करने का आदेश है, वहाँ प्राकृतिक, स्त्री-जनोचित प्यार कर लेने का जो हमारा नैसर्गिक अधिकार है- जैसा कि घटनावश प्रायः स्त्रियाँ किया करती हैं- उसे क्यों छोड़ दूँ।"४

विजय कुछ सोच ही रहा था कि इतने में **"घंटी फिर कहने लगी- समझे विजय । मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। तुम ब्याह करके यदि उसका प्रतिदान करना चाहते हो, तो भी मुझे कोई चिंता नहीं। यह विचार तो मुझे कभी सताता ही नहीं। मुझे जो करना है, वही करती हूँ, करूँगी भी, घुमाओगे, घूमूँगी, पिलाओगे पीऊँगी, दुलार करोगे हँस लूँगी, ठुकराओगे रो दूँगी। स्त्री को इन सभी वस्तुओं की आवश्यकता है। मैं इन सबों को समभाव से ग्रहण करती हूँ और करूँगी।"५**

प्रसाद ने चरित्रों का विश्लेषण स्वयं नहीं किया है, अपितु चरित्र स्वयं अपने व्यापार एवं संवादों के माध्यम से एक दूसरे का चरित्र स्पष्ट करते हुए दिखाए गए हैं। नारी अधिकारों की बात करने वाली घंटी का रूप चित्रण सौंदर्य की छाप छोड़ता है- **"घंटी के कपोलों में हँसते समय गड्ढे पड़ जाते थे। भोली, मतवाली आँखें गोपियों के छाया - चित्र उतारतीं, और उभारती हुई वयस - संधि से उसकी चंचलता सदैव छेड़छाड़ करती रहती। वह एक क्षण के लिए भी गंभीर न रहती, कभी अंगड़ाई लेती तो कभी अपनी अंगुलियाँ चटकाती, आँखें लज्जा का अभिनय करके जब पलकों की आड़ में छिप जाती, तब भी भौहें चला करती । तिस पर भी घंटी बाल-विधवा है ।"६**

भारतीय समाज में नारी सदा ही वस्तु बाजार धर्म कृत्यों का उपकरण, यौन-विलास, पुरुष सेवा और गृहणी के रूप में ही बंध कर रही उससे आगे वह अपने बारे में कुछ सोच ही नहीं पायी । चारित्रिक पतन होने पर भी नारी जाति वात्सल्य और ममता से हीन नहीं होना चाहती। किशोरी पति विहीन है । चरित्रहीन है, किंतु उसका मातृत्व अपराजेय है। वह कहती है- **"तो रोकता कौन है, जाओ, परंतु जिसके लिए मैंने सब कुछ खो दिया है, उसे तुम्हीं ने मुझसे छीन लिया - उसे देकर जाओ! जाओ तपस्या करो, तुम फिर महात्मा बन जाओगे !**

सुना है, पुरुषों के तप करने से घोर कुकर्मो को भी भगवान क्षमा करके उन्हें दर्शन देते हैं। पर मैं हूँ स्त्री जाति, मेरा वह भाग्य नहीं, मैंने जो पाप बटोरा है, उसे ही मेरी गोद में फेंकते जाओ। इसके विपरीत पुरुष वंचक है, स्वार्थी है, कामुक है, निर्वीर्य है। उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता ।"७

प्रसाद ने इस उपन्यास में हिंदू समाज के 'कंकाल' की ओर पाठकों का ध्यान बरबस खींचा है। यहाँ मठों में दुराचार और व्यभिचार हुआ करता है। जिनकी कोटि-कोटि जन पूजा करते है, वे पशुओं से भी गए बीते जघन्य व्यक्ति हैं। अनेक बाहरी आडंबरों में लिपटा हिंदू समाज का रूग्ण, मृतप्राय शरीर पड़ा सिसक रहा है। अबलाओं की यहाँ पग-पग पर दुर्गति होती रहती है। यमुना लतिका को समझाते हुए कहती है- **"कोई समाज और धर्म स्त्रियों का नहीं बहन! सब पुरुषों के हैं। सब हृदय को कुचलने वाले क्रूर हैं। फिर भी मैं समझती हूँ कि स्त्रियों का एक धर्म है, वह है आघात सहने की क्षमता रखना दुर्दैव के विधान ने उनके लिए यही पूर्णता बना दी है। यह उनकी रचना है ।"८**

'कंकाल' का उद्देश्य है हिंदू-समाज और धर्म की रूढ़िवादी मान्यताओं पर करारा व्यंग्य करना । **"उपन्यास कंकाल जो उपन्यास भर नहीं है। प्रसाद के द्वारा झेले गये संकट का सीमांत है। काशी जैसे धर्मकेंद्र में रहते हुए इस शती के तीसरे दशक में प्रसाद ने अपने चारों ओर फैले धार्मिक पाखण्डों, धर्म के ठेकेदारों अर्थात् मठाधीशों, पूँजीपतियों आदि के दुराचरण का "कंकाल में जिस निर्ममता से पर्दाफाश किया है। उसका साक्षी कबीरदास के अलावा मिलना कठिन है। दोनों ने विभिन्न युगों में काशी में रहते हुए धर्म की धज्जियाँ उड़ायी| दिखावटी धर्म की खोल में पनप रहे व्यभिचारी, पाखण्डी, अपराधकर्मी और संकीर्ण लोगों के समाज को प्रसाद ने "कंकाल' कहा है। धर्म की सड़ाँध का, कुंठित और विकृत समाज की दुर्दशा का ऐसा नग्न चित्र उस समय का अद्वितीय साहस था।"९**

निस्संदेह 'कंकाल' यही उद्‌घोष कर रहा है। यह वर्णसंकरता दीर्घकाल व्यापिनी है और हमारा धर्म दुर्बल और पाखण्डी व्यक्तियों के लिए एक आवरण बन गया है, जिसकी आड़ में वे लोगों की श्रद्धा प्राप्त करते रहते हैं। आज हम धर्म और समाज के कंकाल को लेकर ही जीवन-यापन कर रहे हैं।

'तितली' में प्रसाद जी ने भारत के गाँवों की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर अधिक बल दिया है। इस उपन्यास में प्रसाद जी निरंतर प्रेमचन्द का स्मरण, दिलाते हैं। सामंती व्यवस्था पर प्रसाद घन की चोट करते है।

'तितली' एक विशिष्ट संस्कार-युक्त पात्रों के अंतर्द्वंद और संस्कार-जन्म प्रतिकियाओं का एक सुगठित, संतुलित एवं योजना-बद्ध उपन्यास है। इसमें वैसे तो कई पात्र आए हैं, किंतु प्रमुख पात्र चार ही हैं- तितली, मधुबन, शैला और इन्द्रदेव| इनमें से भी तितली का चरित्र सर्वोपरि है। तितली ही इस उपन्यास की नायिका है, उसी का चरित्र सबसे महत्त्वशाली है, वही उपन्यास के आकर्षण का केंद्र बनी हुयी है, वही सर्वाधिक सशक्त और गरिमा प्रधान चरित्रवाली पात्र है। उसके हृदय में आरंभ से ही पीड़ितों एवं दलितों के प्रति दया, सहानुभूति और सेवा का भाव भरा हुआ दृष्टिगोचर होता है। उसमें निर्भीकता, कर्मठता और स्वावलंबन कूट-कूट कर भरा हुआ है। वह अपनी शक्ति और परिश्रम के कारण सभी के आकर्षण का केंद्र बन जाती है। वह अपने साहस और स्वाभिमान के बल पर सबकी श्रद्धा, स्नेह और सम्मान प्राप्त कर लेती है। उसमें एक भारतीय आदर्श नारी के वे सभी गुण विद्यमान हैं, जिसके सहारे वह समाज में उच्च स्थान की अधिकारिणी हो जाती है। उसमें नारी सुलभ कोमलता भी है और शक्ति भी है, वह सौंदर्य की प्रतिमा भी है और गरिमा से भी मंडित है। वह अपने बाल-सखा मधुबन को हृदय से प्रेम करती है और सुशिक्षित, धनी, रूपसंपन्न इन्द्रदेव के व्यक्तित्व का प्रबल आकर्षण भी उसे विचलित नहीं कर पाता। वह भारत की ऐसी पतिपरायणा नारी है, जो एक बार जिसे अपना पति मान लेती है, जीवन भर उसी की सेवा एवं आराधना में लीन रहती है। उसने ऐसी तीन बच्चियों का पालन-पोषण सहर्ष करना स्वीकार किया और इस बात की चिंता नहीं की कि समाज उस पर अवैध संतान होने का लांछन लगा सकता था। उसमें साहस इतना भरा हुआ था कि मधुबन के चले जाने पर भी अपने कर्तव्य का पालन करती रही, सामाजिक अन्याय का विरोध करती रही, अपने पुत्र का दृढ़ता के साथ पालन-पोषण करती रही, सीमित साधनों से ही अपनी खेती की उपज बढ़ा ली, पाठशाला खोलकर बालिकाओं को पढ़ाती रही और पति पर दृढ़ विश्वास करके उसके प्रति कभी भी घृणा का विचार हृदय में नहीं आने दिया। शैला के पूछने पर तितली ने स्पष्ट कहा-**"बहन शैला, संसार भर उनको चोर, हत्यारा और डाकू कहे, किंतु मैं जानती हूँ कि वह ऐसे नहीं हो सकते। इसलिए मैं उनसे कभी घृणा नहीं कर सकती। मेरे जीवन का एक-एक कोना उनके किए हुए स्नेह से संतुष्ट हैं|"१०**

'तितली' की इसी गरिमापूर्ण कर्तव्यनिष्ठा और स्वाभिमानी मनोवृत्ति तथा कर्मठता को देखकर इन्द्रदेव ने भी यह स्वीकार किया था कि वह वास्तव में एक गरिमामयी एवं महीयसी भारतीय नारी है। वास्तव में प्रसाद जी ने नारी की वास्तविक स्थिति का यथार्थ चित्रण करते हुए उसे पात्रानुकूल व्यावहारिक स्थिति प्रदान कराई है।

रामविलास जी "तितली" का विश्लेषण करते हुए कहते है-**"तितली का यथार्थवाद हिंदी कथा-साहित्य के विकास में एक महत्त्वपूर्ण कदम हैं। न केवल प्रेमचन्द वरन् प्रसाद, निराला आदि भी उसी मार्ग पर बढ़ रहे**

थे। यह यथार्थवाद स्वाधीनता ही न चाहता था, वह सामाजिक न्याय भी चाहता था। रामविलास जी आगे कहते हैं कि- प्रसाद-साहित्य हिंदी भाषी जनता की मूल्यवान विरासत है। उसके आधार पर हम कह सकते है कि इस संसार को सत्य समझना, पीड़ित जनता का समर्थन करना, अन्याय का सक्रिय विरोध करना, साहित्य में उदासीन और तटस्थ न रहकर सामाजिक विकास में सक्रिय योग देना, यह सब भारतीय 'संस्कृति के अनुकूल ही है, उसका सहज विकास है। प्रसाद जी की रचनाएँ दुःखवाद, मायावाद, ; शुद्ध कलावाद भारतीय इतिहास में वर्गों को अस्वीकार (स्वीकार) करने आदि के विरोध में एक सजग लेखक के हाथों में सबल अस्त्र है|"११

शैला भी 'तितली' उपन्यास की प्रमुख पात्र है। शैला के रूप में प्रसाद ने एक ऐसी पाश्चात्य नारी का चित्रण किया है, जो भारतीय संस्कृति एवं विचारधारा से प्रभावित होकर अंत में पूर्णतया भारतीय नारी हो जाती है। शैला के माता-पिता अंग्रेज थे। वह अपनी माता जेन से भारत के बारे में बहुत कुछ सुनती रहती थी और उसमें भारत के प्रति आकर्षण जाग्रत हो गया था। वह इन्द्रदेव के साथ बहुत दिनों तक रही, परंतु कभी उसने इन्द्रदेव से विवाह करने की इच्छा प्रकट नहीं की। उसका प्रेम वाट्सन के प्रति था। परंतु इन्द्रदेव से विवाह कर लेने के बाद भी वाट्सन के प्रति उसका आकर्षण बराबर बना रहा। उसका व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली एवं आकर्षक था। उसमें विलक्षण संयम था और वह कृतज्ञता से परिपूर्ण थी। यदि वाट्सन उससे विवाह करने के लिए तैयार हो जाता तो वह इन्द्रदेव को तलाक देकर उससे विवाह कर सकती थी। यही उसमें पाश्चात्य संस्कृति के लक्षण विद्यमान थे। परंतु वह बड़ी संवेदनशील नारी थी।

वाटसन, इन्द्रदेव और शैला की त्रिकोणात्मक कथा का आधार प्रसाद द्वारा वास्तविक यथार्थ पर तैयार किया सा लगता है। शैला जो दोनों के ही आकर्षण का केंद्र थी अपनी यादों में खोयी हुई सी प्रकृति के दृश्य को देखती हुई मन-ही-मन कह उठी-**"नहीं, अब साफ-साफ हो जाना चाहिए। कहीं यह मेरा भ्रम तो नहीं? मुझे निराधार इस भाप की लता की तरह बिना किसी आलंबन के इस अनंत में व्यर्थ प्रयास नहीं ही करना चाहिए। इन दो-एक किरणों से तो काम नहीं चलने का। मुझे चाहिए संपूर्ण प्रकाश! मैं कृतज्ञ हूँ, इतना है तो! अब मुझे क्या माँग है ? इन्द्रदेव के साथ क्या निभने का नहीं? वह स्वतंत्रता का महत्त्व नहीं समझ सके। उनके जीवन के चारों ओर सीमा की टेढ़ी-मेढ़ी रेखा अपनी विभीषिका से उन्हें व्यस्त रखती है। उनको संदेह है, और होना भी चाहिए। क्या मैं बिलकुल निष्कपट हूँ? क्या वाटसन? नहीं-नहीं वह केवल स्निग्ध भाव और आत्मीयता का प्रसार है। तो भी मैं इन्द्रदेव से विरक्त| क्यों हूँ ? मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं। इतने थोड़े-से समय में यह परिवर्तन! मैंने इन्द्रदेव के समीप होने के लिए जितना प्रयास किया था जितनी साधना की थी, वह सब क्या ऊपरी थी ? और वाटसन ! फिर वही वाटसन !"१२**

शैला के व्यक्तित्व में एक अंतर्द्वंद होते हुए भी शैला ने अनेक अभावों एवं संकटों का सामना किया था। इसी कारण वह ग्राम-सुधार के कार्य में बड़ी तत्परता के साथ संलग्न हो गयी। उसमें भी कर्मठता, कर्तव्यनिष्ठा और स्वावलंबन कूट-कूट कर भरे हुए थे। वह बड़ी उदार एवं निर्लोभ थी, जब श्यामदुलारी ने सारी जमींदारी शैला के नाम कर दी, तब उसने उसकी आमदनी से ग्राम-सुधार के कार्य को ही आगे बढ़ाया, उस संपत्ति से आनंद एवं विलास से परिपूर्ण जीवन व्यतीत नहीं किया। उसमें ईसाई मिशनरियों का सा उत्साह भरा हुआ था। वह भावुक नारी थी, इसी कारण उसमें उदारता अधिक थी। शैला की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हुए प्रसाद जी लिखते हैं-**"अज्ञात नियति की प्रेरणा उसे किस सूत्र से यहाँ खींच लायी है, यहाँ पर उसकी माता की कितनी सुखद स्मृतियाँ शून्य में विलीन हो गयी। आह! उसके दुःख से भरे वे अंतिम दिन कितने प्यार से इन स्थानों को स्मरण करते रहें होंगे। इसी झील में घूम कर इसी कोठी में लौट चली आई होगी |"१३**

'तितली' उपन्यास की रचना ग्रामीण वातावरण की पृष्ठभूमि पर की है। इसलिए इसमें ग्रामीण वातावरण की अत्यंत मनोरम झाँकियाँ मिल जाती हैं। ग्रामीण वातावरण में जहाँ निराशा, कुंठा एवं शोक का चित्रण हुआ है, वहाँ प्रसाद ने ग्रामीण जीवन के उल्लास, आनंदातिरेक एवं मस्ती का चित्रण करते हुए बसंत पंचमी के अवसर पर हर्ष-उल्लास प्रसन्नता एवं मस्ती भरे वातावरण का चित्रण भी अंकित किया है, जो ग्राम्य जीवन की दरिद्रता में भी सजीवता एवं अभावों में भी हर्ष का द्योतक है। तितली के सौंदर्य को दर्शाते हुए प्रसाद जी लिखते हैं-**"उसने देखा तितली अब चंचल लड़की न रही, जो पहले मधुबन के साथ खेलने आया करती थी। उसकी काली रजनी सी उनींदी आँखें जैसे सदैव कोई गंभीर स्वप्न देखती रहती हैं| लंबा घरघरा अंग, गोरी पतली उँगलियाँ, सहज उन्नत ललाट, कुछ खिंची हुयी भौंहे और छोटा सा पतले-पतले अधरों वाला मुख साधारण कृषक बालिका से कुछ अलग अपनी सत्ता बना रहे थे। कानों के ऊपर से ही घूँघट था, जिससे लटें निकली पड़ती थी। उसकी चौड़े से किनारे की धोती का चम्पई रंग उसके शरीर में घुला जा रहा था। वह संध्या के निरभ्र गगन में विकसित होने वाली अपने ही मधुर आलोक से संतुष्ट एक छोटी-सी तारिका थी |"१४**

इस कृति पर प्रसाद के व्यक्तित्व की सघन छाया है। प्रसाद को जीवन के कटु अनुभवों की, सौहार्द और स्नेह की छिन्नता की, वैयक्तिक चेतना का वैषम्य और नारी की अनिश्चित आर्थिक पराधीनता की सच्ची तस्वीर ज्ञात प्रतीत थी। वे इनके कारणों के प्रति भी सजग थे इसलिए उन्होनें सामाजिक उत्थान, राष्ट्रीय कल्याण एवं पारिवारिक संगठन के लिए नारियों का सहयोग आवश्यक माना है यह सही है कि जीवन-विकास-प्रकिया के अनिवार्य तत्त्व केवल संघर्षजन्य होते हैं। आदर्श तो कलह की रात का प्रभात मात्र है परंतु तितली जैसी नारियों की सकिय चेतना अपनी सफलता की मंजिल पा सकती हैं। तितली ने अपनी जीवन शैली से भारतीय स्त्रीत्व, पत्नीत्व और मातृत्व को सफल बनाया है। प्रसाद के सभी उद्देश्य तितली में समाहित हो गए हैं। तितली प्रसाद का प्रतिनिधित्व करती है। उसे अपनी निष्ठा और कर्मो पर बेहद आत्मविश्वास है।

प्रसाद का तीसरा किंतु अपरिसमाप्त उपन्यास "इरावती" की प्रमुख पात्र इरावती उपन्यास का केंद्रीय चरित्र है, जिसके चारों और घटनाएँ नाचती हैं। नर्तकी इरावती में अपने स्त्रीत्व का अहम् है। उसे अपना अपमान किसी भी कीमत पर असहय है। उसका और अग्निमित्र का बचपन से प्रेम था। परंतु इरावती की आर्थिक परिस्थिति संपन्न नहीं थी। अपनी जीविका चलाने के लिए नृत्य जैसा समाज घृणित कार्य करने लगती है। वह अपने विचार व्यक्त करती हुई कहती है-**"मैं बलपूर्वक अपने हृदय से उन कोमल अनुभूतियों को निकाल दूँगी। कामसुखों की स्मृतियों को कड़ी से कड़ी फटकार दूँगी। प्रयत्न करूँगी! भगिनी! तुम भी ऐसा ही करो |"१५**

प्रसाद द्वारा इरावती का चित्रण एक विशेष धरातल पर उत्पन्न किया गया है। प्रेम जो मानवीय भावनाओं का आधार है उसके लिए इरावती का हृदय सूख गया है। उसके लिए वैभव विलास केवल कुतूहल उत्पन्न कर सकते हैं, आकर्षण नहीं। इस तरह से इरावती अपने 'स्व' की रक्षा के लिए प्रयत्नशील रहती है। उसमें कला है, यौन प्रेम है, सौंदर्य है, मानसम्मान है, परिस्थति से टक्कर लेने की शक्ति है इसलिए उसका 'स्व'- के लिए आग्रह होना सहज स्वाभाविक है और भी एक महत्वपूर्ण यह है- वह प्रसाद की नायिका है—अपने स्त्रीत्व की रक्षा के लिए प्रयत्नशील। उसे बहिर्मूखी भावुक भी कहा जा सकता है क्योंकि वह अपनी भावनाएँ स्पष्ट रूप से व्यक्त करती रहती है वहीं दूसरी ओर बदले की आग में तड़पने वाली कालिन्दी इस उपन्यास की दूसरी प्रमुख स्त्री पात्र है। कालिन्दी जो सुंदर, चतुर, साहसी एवं परिस्थिति का सामना करने में समर्थ ऐसी नंदवंश की राजकुमारी है जो बदला लेने के लिए तत्पर हो गई है। इस काम के लिए उसने एक स्वस्तिक दल की स्थापना की है. परंतु, दिखावे के लिए शिव मंदिर की परिचारिका है। उसके अचेतन मन में मौर्य वंश का विनाश करने की तीव्र लालसा है। वह इस बदले की आग में जलती रहती है। उसके मन में यही एक ग्रंथि है। इस ग्रंथि ने उसके अहं को सहलाया है, फूसलाया है अत: वह किसी भी साहसी काम के लिए तत्पर रहती है।

इस प्रकार प्रसाद के तीन उपन्यासों में से पहला "कंकाल' उपन्यास शहरी जीवन को आधार बनाकर लिखा गया है, तो 'तितली' उपन्यास ग्रामीण जीवन पर आधारित है और तीसरा अपूर्ण 'इरावती' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर मौर्य- साम्राज्य के पतन एवं शुंग-वंश के 5 प्रादुर्भाव के साथ-साथ बौद्ध धर्म की पुनः प्रतिष्ठा को आधार बनाकर लिखा जा रहा था | प्रसाद ने समाज में व्याप्त अनाचार एवं व्यभिचार का चित्रण करने के लिए 'कंकाल' में ऐसे पात्रों का जमघट लगा दिया है जो जारज संतान है, तो 'तितली' में प्रायः ऐसे पात्र अधिक हैं, जो आँधी-तूफानों में पर्वत के समान अड़िग रहते हैं। 'तितली" उपन्यास की तितली भारतीय नारी का आदर्श है, जो अत्यंत निर्भीक कर्मठ, कर्तव्यपरायण एवं अध्यवसायी युवती है, अपनी साधना में मस्त रहती है और नारीत्व एवं सतीत्व के उच्च आदर्श की मूर्ति है। प्रसाद ने युग-युग से शोषित एवं प्रताड़ित नारी के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए तितली का चरित्र-चित्रण किया है। उपन्यासों की रचना करते समय प्रसाद का मूल उद्देश्य यह रहा है कि वर्तमान भारतीय जन-जीवन का यथार्थ चित्र पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए। वे अपने नाटकों में अतीत के उच्च गगन में विहार करते रहे थे और प्रेमचंद जी के कहने पर वे यथार्थ की भूमि पर उतरे थे। इसी कारण उन्होंने 'कंकाल' और 'तितली' जैसे यथार्थवादी उपन्यास में यथार्थ चरित्र लिखकर तत्कालीन मानव-जीवन की दुर्बलता एवं सबलता, विषमता एवं समता, सदाचार एवं अनाचार, पर दुःख कातरता एवं पर-पीड़ित अकर्मण्यता एवं कर्मठता, परावलम्बन एवं स्वावलम्बन, पराधीनता एवं स्वाधीनता, उत्थान एवं पतन, आशा-निराशा, स्वस्थता एवं अस्वस्थता, स्वार्थ एवं परमार्थ, रूढ़िवादिता एवं विचार-स्वातन्त्रय सहयोग एवं असहयोग व्यावहारिकता एवं अव्यावहारिकता, स्वर्ग और नरक आदि सभी पहलुओं पर विचार किया है और नारी चरित्र एवं चेतना को जाग्रत करके उसका आधिपत्य स्थापित करने का सफल प्रयास किया है।

प्रसाद जी भावात्मक कहानियों के प्रणेता माने जाते हैं। हिंदी-साहित्य के मौलिक कहानी-लेखकों में प्रसाद जी अग्रणी हैं। इनके पाँच कहानी संग्रह समयानुसार प्रकाशित होते रहे। प्रसाद जी की कहानियों में पात्रों के जीवन का कोई एक अनुभव, एक दृष्टिकोण, एक घटना, एक भाव, एक दृश्य होता है और उनकी पात्र परिकल्पना प्रधानतः स्वच्छंदतावादी है। उनकी कहानियों के पात्र कहानी विधा के अनुसार किसी एक वर्ग में सम्मिलित किए जा सकते

ROOTINDEXING
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in June 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

हैं, परंतु उनकी रचनाशैली ऐसी बहुआयामी है कि वे पात्र अपने आप को अनेक वर्गों में सम्मिलित करने की माँग करते हैं। कुछ कहानियों में अनेक घटनाएँ होने के कारण कई पात्रों के चरित्रों में परिवर्तन नजर आते हैं। उदाहरण स्वरूप 'सालवती' कहानी की नायिका सालवती शुरू-शुरू में अंतर्मुखी भावुक सी लगती है। 'आँधी' की लैला शुरू में भावुकवश रामेश्वर से प्रेम करती है और बाद में उसे विवाहित जानकर अंतर्मुखी भावुक होने पर अपना जीवन स्वयं त्याग देती है। इस तरह प्रसाद की नारी सालवती भावना और संवेग से प्रेरित होने वाली एवं दूसरों से सहानुभूति की अपेक्षा रखने वाली स्त्री है। उसके चरित्र में परिवर्तन होते रहते हैं कुछ स्त्री पात्रों के जीवन में सुख और सत्य की आपस में संघर्षमय स्थिति पैदा होती है तो बहुत से पात्र प्रेम करना अपनी जीवन शैली समझकर जीते हैं तो कुछ पात्रों के लिए प्रेम ही जीवन शक्ति बन जाती है। उदाहरण के लिए आँधी की लैला और 'पुरस्कार' की मधुलिका के जीवन में सुख और सत्य की आपस में संघर्ष की स्थिति पैदा होती है। एक उदाहरण सप्रमाण प्रस्तुत ' हैं-**"कौशल-नरेश ने पूछा- मधूलिका, तुझे जो पुरस्कार लेना हो, माँग। वह चुप रही। राजा ने " कहा-मेरी निज की जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ। मधूलिका ने एक बार बंदी अरुण की ओर देखा। उसने कहा-मुझे कुछ न चाहिए। अरुण हँस पड़ा। राजा ने कहा-नहीं, मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले। तो मुझे भी प्राणदण्ड मिले। कहती हुई वह बंदी अरुण के पास जा खड़ी हुई ।१६**

इस प्रकार प्रसाद जी के द्वारा रचित पात्र एक आदर्श स्थापित करते हैं। 'प्रतिध्वनि' संग्रह में गुदड़ी में लाल कहानी की बुढ़िया स्वाभिमानी है। बाबू रामनाथ दया भाव से उसे पेंशन देने का विचार व्यक्त करते हैं, तो बुढ़िया को सदमा पहुँचता है और वह चल बसती है।

"प्रसाद की समूची भाव-यात्रा कोमलता के हाथों कठोरता की पराजय का सर्जक विधान है। वे मनुष्य के भीतर बची-खुची संवेदना को नष्ट होने से बचाने का प्रयास करते हैं, ऐसे में, जीवन के अनेक दुर्भेद्य क्षेत्रों में घुसने का साहस दिखाते हैं।"१७" उनके द्वारा चित्रित नारी पात्र अपनी संवेदना के बहुआयामी फलक से प्रत्येक पाठक का मन मोह लेते हैं।

'आकाशदीप' की ममता तो आदर्श का ज्वलंत उदाहरण है। वह सही अर्थ में ब्राह्मणी है। वह अपने पिता को समझाती है कि परमपिता की इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम नहीं करना चाहिए। अपने पिता के हत्यारे मुगल को वह आश्रय देती है और वहीं दूसरी ओर आँधी की लैला रामेश्वर से प्रेम करती है। उसका प्रेम स्वच्छंद प्रकृति का है। वह स्वतंत्र बन-विहंगिनी है। वह रामेश्वर के साथ जीवन बिताने का स्वप्न देखती है। बनजारे का जीवन बिताने वाली लैला प्रेम बंधन में बँधना चाहती है। रामेश्वर का इंकारी पत्र मिलने पर वह उसका खून करना चाहती है। उसके मन में उठने वाली अंधड़ आँधी की कल्पना ही की जा सकती है। परंतु लैला समझदार लगती है और रामेश्वर का बसा हुआ संसार उजाड़ना नहीं चाहती। लैला खुद आँधी में पेड़ के नीचे आती है और उसके मन में उठने वाली आँधी हमेशा के लिए रुक जाती है। 'दासी' कहानी में इरावती बलराज से प्रेम करती है। दोनों अपने प्रेमियों से मिलने के सपने देखती हैं। बलराज अपने अहंकार की तुष्टि के लिए इरावती को छोड़कर जाता है तो इरावती उसे अपना हृदय देने से मना करती है। फिरोजा के समझाने से वह बलराज से मिल लेती है। इरावती और फिरोजा भावना प्रधान और संवेगों से प्रेरणा पाने वाली नारियाँ हैं। 'पुरस्कार' की मधुलिका अपने पिता के नाम की संरक्षिका बनना चाहती है। उसमें श्रद्धा और स्वाभिमान का संयोग हुआ है। वह अपनी जमीन बेचने से इंकार करती है और अपने राज्य का नियम भी नहीं तोड़ती और अपने दिन दिवास्वप्न में बिताने वाली यह मधूलिका अरुण के प्रेम को ठुकराती है और तीन वर्ष के बाद परिस्थिति से पीड़ित होने के कारण उसी अरुण को चाहने लगती है। अरुण के कहने पर ही वह अपने राज्य को धोखा देने के लिए तत्पर होती है, परंतु संस्कार के कारण अपने राज्य की रक्षा करती है। उसके प्रेम और कर्तव्य के बीच का अंतर्द्वंद उसकी अंतर्मुखी भावुकता का निदर्शक है। अंत में मधुलिका स्वयं के लिए प्राणदण्ड को पुरस्कार के रूप में माँगकर प्रेम और कर्त्तव्य दोनों को निभाती है और प्रायश्चित भी लेती है। 'ग्रामगीत' की रोहिणी गीत प्रेमी थी। उसकी स्वरलहरी में उन्मत्त वेदना कलेजे में कचोटने वाली करुणा थी। इसी कारण लेखक उसकी ओर आकर्षित होते हैं। '"देवरथ' का स्थविर वासनापूर्ण है। वह सुजाता का शीलभ्रष्ट करता है। इस पर सुजाता का यह कथन उल्लेखनीय है-**"पवित्र गार्हस्थ बंधनों को तोड़कर तुम लोग भी अपनी वासना-तृप्ति के अनुकूल ही तो एक नया घर बनाते हो, जिसका नाम बदल देते हो। तुम्हारी तृष्णा तो साधारण - सरल गृहस्थों से भी तीव्र है, क्षुद्र है और निम्न कोटि की है।"१८**

'सहयोग' कहानी में मनोरमा पुरुषी अहंकार से प्रभावित होती है। उसका पति मोहन उसकी ओर तब आता है जब उसकी प्रगल्भा प्रेयसी उसका त्याग करती है, परंतु मनोरमा की सेवा से प्रसन्न होकर वह उसके चरणों में गिर जाता है।

"प्रसाद मूलतः मानव-मन की विकृति की अपेक्षा उदात्तीकरण पर श्रद्धा रखने वाले कलाकार हैं। वे मानव मन की मूल-प्रवृत्तियों की तृप्ति की अनिवार्यता पर जोर तो देते हैं परंतु सांस्कृतिक उत्थान का

दृष्टिकोण रखने के कारण, साथ ही व्यक्तिगत दृष्टिकोण का आदर्शवादी चिंतन करने के कारण किसी पात्र पर जबरदस्ती करना मानते हैं।"१९

"प्रसाद की आकाशद्वीप और आँधी की कहानियों से लगता है कि वे सन् 1925 ई0 से कई क्षेत्रों में प्रयोग कर रहे थे। इन संकलनों में जहाँ उनके चिंतन में स्पष्टता और वर्तमान यथार्थ के प्रति परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का आभास मिलता है। जीवन जगत् के अनुभवों की परिपक्वता और अंतर्मुखी चिंतनशीलता के साथ फायड, मार्क्स और डार्विन आदि के प्रभाव भी इस काल की कहानियों में स्पष्ट हैं |"२०

'कलावती की शिक्षा' कहानी में कलावती परिस्थिति से समझौता करना जानती है और पुरुष-स्वभाव का अनुभव सिद्ध उपयोग करना भी बखूबी जानती हैं। 'देवदासी' की पद्मा देवदासी का काम करने वाली एक ऐसी नारी है जो रामस्वामी का निमंत्रण ठुकराती है क्योंकि उसे समाज की स्थिति का अनुभव है और वह अपना कार्य भावना की दृष्टि से उचित समझती है। इस प्रकार बुढ़िया, चम्पा, इरावती, मधूलिका, पद्मा, आदि पात्रों की मनः स्थिति समयानुसार बदलती रही है। इनमें सामाजिकता और व्यवहारिकता दिखाई देती है। ये सभी पात्र अनुभव से सीखे हुए हैं, उन्होंने वर्तमान समस्याओं को हल भी किया है। वे भावी परिणामों के लिए तैयार भी हो जाते हैं।

'इन्द्रजाल' कहानी की बेला अपने आपको एक हजार में ठाकुर के हाथों बेचती है। यह परिस्थिति से समझौता ही है जो वह ठाकुर से निभाती रहती है। नारी आजीवन परिस्थितियों की परिधि पर ही घूमती रहती है। प्रसाद की नारी सृष्टि भावनाओं से प्रेरित होकर ही परिस्थितियों से समझौता करती हैं।

प्रसाद की कहानी के कुछ नारी पात्र अहम् से प्रेरित हैं। यह उनके चरित्र की विशेषता है। जिससे उनकी मनः स्थिति के बारे में पता चलता है। "गुदड़ी में लाल' इस कहानी की बुढ़िया रामनाथ से पेंशन नहीं लेती, चंपा बुद्धगुप्त पर विश्वास नहीं रख सकती। "दासी' कहानी की इरावती बलराज को स्वार्थी, अमीर बनने के इरादे से लालची समझकर प्रेम करने से इंकार करती है। 'पुरस्कार' की मधूलिका महाराज से अपनी भूमि न बेचने की इच्छा व्यक्त करती है और राजा का प्रतिदान, अनुग्रह नहीं लेती। वह दूसरों के खेतों में काम करती और चौथे पहर रूखी सूखी खाकर पड़ी रहती है। इस तरह से बुढ़िया, चम्पा, हरावती, मधूलिका ये सारी नारियाँ अहम् से प्रेरित नजर आती है। इन्हें जीवन की वास्तविकता का परिचय हुआ है और इनका चेतन मन भी जाग्रत हुआ है। इनमें सामाजिकता और व्यवहारिकता दिखाई देती है। ये सभी पात्र अनुभव से सीखे हुए हैं, उन्होंने वर्तमान समस्याओं का हल भी किया है, वे भावी परिणामों के लिए तैयार भी हो गए हैं। निस्संदेह प्रसाद नारी मनोविज्ञान के पारखी थे। नारी के आंतरिक मनोभावों को दर्शाते वक्त प्रसाद जी का वैचारिक दृष्टिकोण बहुआयामी बनता चला जाता है। मधूलिका, नीरा, सुजाता, सालवती, ममता वस्तुतः नारी-भावना के चिरंतन प्रतीक हैं।

कहीं-कहीं पर प्रसाद की नारियाँ विरोधाभास लिए हुए हैं। एक रूप प्रेम का हैतो दूसरा घृणा से भरे हृदय का। "आकाशद्वीप" की चंपा एक ऐसी नारी है जो प्रेम के लिए बहुत कुछ कर गुजरे वाली है। वह एक कोमल प्रवृत्ति की नारी है। उसका हृदय भी प्रेम और घृणा के तराजू पर तुला है। वह बुद्धगुप्त से प्रेम करने लगती है और मणिभद्र का तिरस्कार करती है। उसी ने बुद्धगुप्त को प्रेरणा दी, उसे कोमलता का परिचय कराया, उसे ऐश्वर्यशाली बनाया। परंतु बाद में उसी के मन में अपने पिता का प्रेम और मणिभद्र का तिरस्कार एकाकार होकर बुद्धगुप्त का लक्ष्य साधने लगे। यहीं उसके मन में प्रेम-घृणा का एक अजीब-सा खेल शुरू हुआ जिसे अंतर्द्वंद कहा जा सकता है। उसका मन आकाशद्वीप की भाँति जलने लगा।

चंपा का यह कथन नारी मन के अंतर्द्वंद की चरमावस्था को प्रकट करता हैं-**"विश्वास? कदापि नहीं बुद्धगुप्त जब मैं अपने हृदय पर विश्वास नहीं कर सकी, उसी ने धोखा दिया तब मैं कैसे कहूँ ? मैं तुम्हें घृणा करती हूँ, फिर भी तुम्हारे लिए मर सकती हूँ। अंधेर हैं जलदस्यु। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।"२१** अंततः वह न बुद्धगुप्त का साथ देती है और न उससे बदला ही लेती है। तो वहीं दूसरी ओर 'आकाशद्वीप" की ही ममता संस्कारगत एवं परिस्थितियों से समझौता करने वाली नारी है। प्रसाद द्वारा यहाँ परिस्थितिजन्य घृणाभाव और ब्रहम्मणी के संस्कारगत सेवाभाव का संघर्ष दिखाया गया है और अंत में सेवाभाव की विजय दिखाई गई है। ममता यवनों से पिता का हत्यारा समझकर घृणा करती है परंतु जब हुमायूँ आश्रय माँगता है तो उसके मन में क्षणमात्र के लिए संघर्ष होता है और अंत में हुमायूँ को आश्रय देती है। यह उसके कोमल हृदय एवं नारी के विशाल हृदय का सूचक है। उसका यह कथन चिंतनीय एवं विचारणीय है-

"तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मणकुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ।"२२

प्रसाद कामभाव को प्रमुख भाव मानते हैं। मनुष्य को अपने शारीरिक सुख के लिए इसकी आवश्यकता पड़ती है। प्रसाद की कहानियों में लैंगिक सुख का अनुसरण एवं यौन-विकृति से पीड़ित पात्रों की संख्या में स्त्रियों की संख्या भी है। लैंगिक सुख का अनुशरण करने वाली स्त्रियों में तिष्यरक्षिता, चूड़ीवाली, विलासिनी, 'रूप की छाया' की सरला, चित्र वाले पत्थर' की विधवा मंगला आदि पात्र ही नजर आते हैं। 'अशोक' कहानी में अपने सौतेले

पुत्र कुनाल के सौंदर्य से विवश होकर तिष्यरक्षिता उससे प्रेमभिक्षा माँगती है। यह यौन विकृति एवं लैंगिक सुख की इच्छा ही है क्योंकि यह संबंध समाज मान्य नहीं है यह यौन विकृति कुंठा में बदल जाती है और कुनाल की आँखें निकालने की आज्ञा मिलती है। इसी प्रकार चूड़ीवाली विलासिनी बाबू विजयकृष्ण के रूप, यौवन और चारित्र्य के प्रलोभन में आ गई। 'रूप की छाया' की सरला जो कई वर्षो से पति सुख न मिलने के कारण विद्यार्थी शैलनाथ को अपने रूप, धन और आश्रय के जाल में उलझाती है। सरला का पति उसे बचपन में ही छोड़ जाता है। कामभावना के दमन के कारण उसके मन में यौन विकृति आ जाती है। अपने पति के समान दिखाई देने वाले शैलनाथ को अपने यौनजाल में फँसाने का असफल प्रयत्न करती है। इस संदर्भ में यह कथन द्रष्टव्य है-**"सरला जैसे उन्मादिनी हो गई। यौवन की उत्कंठा उसके बदन पर बिखर रही थी। प्रत्येक अंग में अंगड़ाई, स्वर में मरोर, शब्दों में वेदना का संचार था|"२३** विधवा मंगला भी वासना का दमन होने के कारण छविनाथ के साथ भागकर जाती है और जल्दी ही उससे ऊबकर मुरली को चाहने लगती है। मंगला का यह कथन-**"स्त्री जीवन की भूख कब जग जाती है इसको कोई नहीं जानता, जान लेने पर तो उसको बहाली देना असंभव है। उसी क्षण को पकड़ना पुरुषार्थ हैं|"२४**

प्रसाद के नारी आदर्श में पत्नीत्व की मर्यादा की एकनिष्ठता का पूर्ण समर्थन किया गया है। प्रसाद का मत है कि नारी के सम्मान आत्म-गौरव की रक्षा हर प्रकार से होनी चाहिए। यदि पति इसमें असमर्थ हो तो पत्नी द्वारा पति की रक्षा सर्वोपरि ध्येय है। उसके लिए लौकिक बंधनों तक की अवहेलना कर दी गई है। इस प्रकार प्रसाद जी ने नारी के नैतिक आदर्श के सभी सद्गुणों-दया, त्याग क्षमा, सहनशीलता, एकनिष्ठता, विश्वास, शरणागति आदि को मानकर भी उनका आचरण परिस्थितियों के अनुसार करने का ही विश्वास प्रकट किया है। नारी की आज्ञाकारिता की परीक्षा उसे समाप्त करके नहीं ली जा सकती है। उनका मत है कि नारी से नैतिकता की आशा करने वाला पुरुष भी नीति एवं धर्म का पालक होना चाहिए। यदि पुरुष ऐसा नहीं करता तो नारी भी 'स्वत्त्व' एवं सम्मान रक्षा के लिए पुरुष का विरोध करने का पूर्ण अधिकार रखती है।

प्रसाद ने अपने गद्य साहित्य में मुख्य रूप से 'कंकाल' उपन्यास में नारी के आधुनिक चरित्र को उजागर करते हुए काशी जैसी नगरी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। प्रसाद की नारी स्वछंद रूप से विचरण कर सकने में सक्षम है। वह आज वर्तमान नारी जीवन को भोगने का यथार्थ प्रस्तुत करती है। तो वहीं 'तितली' उपन्यास ग्रामीण परिवेश की उस नारी का चित्रण प्रस्तुत करता है जो ग्राम्य परिवेश में रहते हुए वहीं के वातावरण में रच बस गयी है और उस छोटे से केंद्र से अपने जीवन का अध्याय आरंभ करने में सक्षम होती है। इस प्रकार प्रसाद का नारी आदर्श कहीं सत्यता को प्रकट करता है तो कहीं भ्रामक स्थिति उत्पन्न करता है। प्रसाद ने जब समाजरूपी कंकाल का चित्रण किया तो उनके समक्ष न जाने कई ऐसे पहलू आए जिन्हें वे कमशः प्रस्तुत करते चले गए। 'कंकाल' में प्रसाद की नारी उन्मुक्त जीवन जीना चाहती है और किसी बंधन में बंध कर नहीं रहना चाहती है चाहें इसके लिए उसे अपने स्वयं की मर्यादा के विपरीत ही क्यों न जाना पड़े।

निस्संदेह प्रसाद एक उच्चकोटी के कहानीकार थे। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से अतीत के पृष्ठों पर लगी धूल को साफ किया और उनका जो मुख्य लक्ष्य था नारी अस्मिता, नारी पद गरिमा एवं नारी आदर्श उसको उन्होंने पूर्णरूप से बल प्रदान किया। उनकी कई कहानियाँ नारी आदर्श, प्रेम, मर्यादा, नैतिकता, वेदना, वीरता, प्रतिशोध, संवेदना, अंतर्द्वंद, चिंतनशीलता, दांपत्य आदि भावनाओं के स्तर पर लिखी गई उत्कृष्ट कोटि की श्रेणी में आती हैं। यह कहने में अतिशयोक्ति न होगी कि प्रसाद की कहानियों में चित्रित नारी पात्र उनकी बहुआयामी सोच का प्रतिफल है।

संदर्भ

१. कंकाल; पृ0 41,पृ० 199,प0 302,पृ० 126-127,पृ0 127
२. प्रसाद ग्रंथावली भाग-3; पृ० 73,पृ० 121,पृ० 199
३. जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता; पृ० 47-48
४. तितली, पृ० 412
५. परम्परा का मूल्यांकन; पृ0 122
६. तितली; पृ० 410, तितली; पृ0 422, पृ0 283
७. प्रसाद ग्रंथावली भाग-3; पृ० 463,प्रसाद ग्रंथावली भाग-2; पृ० 286, पृ० 363
८. प्रसाद ग्रंथावली भाग-2; पृ० 362
९. प्रसाद साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन; पृ० 203
१०. प्रसाद ग्रंथावली भाग-2; पृ0-12, पृ० 120, पृ० 125, पृ० 190,वही; पृ0 339

सहायक ग्रंथ-

1. दुधनीकर; डॉ एम0एस0, प्रसाद साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, अलका प्रकाशन,

किदर्व नगर, कानपुर, 205011
2. दीक्षित; डॉ. सूर्यप्रसाद, प्रसाद साहित्य की अंतः चेतना, कलमघर प्रकाशन, जोधपुर, प्रथम संस्करण, 1973
3. पाण्डेय; गंगा प्रसाद, छायावाद के आधार स्तम्भ, लिपि प्रकाशन, ई 5/20 कृष्णानगर, दिल्ली-51, प्रथम संस्करण, 1971
4. पाण्डेय; सुधाकर, आधुनिक हिंदी साहित्य मूल्य और मान्यताएँ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1979
5. मदान; इन्द्रनाथ, जयशंकर प्रसाद, चिंतन व कला, हिंदी भवन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1956
6. मिश्र; डॉ. सत्यप्रकाश, जयशंकर आह ग्रंथावली, भाग-1, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1, सं० 2010
7. सक्सेना; डॉ. द्वारका प्रसाद, प्रसाद-दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, प्रथम संस्करण 1969
8. वही; हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली-2
9. सक्सेना; डॉ. सुनीता, महिला उपन्यासकारों की सामाजिक चेतना, आशा पब्लिशिंग कम्पनी, आगरा-282004, प्रथम संस्करण 2004
10. शतपथी; डॉ. अर्जुन, मधुसूदन साहा, जयशंकर प्रसाद परिप्रेक्ष्य एवं परिदृश्य, पराग प्रकाशन, 3/144, कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-32, प्रथम संस्करण 1989
11. सिंह; नामवर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1955